ISBN: 978-93-94570-67-2

संस्कारों में निहित मानव मूल्यों की प्रासंगिकता एवं उपादेयता

नम्रता कुमारी

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
कोल्हान विश्वविद्यालय,
चाईबासा.

सत्यहिंसागुणै: श्रेष्ठा विश्वबंधुत्वशिक्षिका

विश्वशांति सुखाधात्री, भारतीया हि संस्कृति:। (कपिल)

संस्कार प्रत्येक धर्म या संप्रदाय के महत्वपूर्ण अंग है।अध्यात्म प्रधान भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्वपूर्ण योगदान है। संस्कार धार्मिक एवं सामाजिक एकता के प्रभाव कारी माध्यम रहे हैं।संस्कारों के माध्यम से ही व्यक्ति अपने समाज का पूर्ण रूप से योग्य सदस्य बनता है वह अपने शरीर मन और मस्तिष्क को पवित्र करता है अपनी सहज प्रवृत्तियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता है। संस्कारों से परिपूर्ण मानव जीवन भारतीय संस्कृति का मेरुदंड है।व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में सकारात्मक चिंतन और नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का संयोजन ही संस्कार कहलाता है। संस्कार का मूल अर्थ है शुद्धीकरण। संस्कार सद्विचार और सदाचार के नियामक होते हैं।भारतीय मानव जीवन में संस्कारों का महत्व वैदिक काल से चला आ रहा है संस्कार का अर्थ उन धार्मिक कृत्यों से है जो किसी व्यक्ति को अपने समाज का पूर्ण रूप से योग्य सदस्य बनाने के उद्देश्य से उसके शरीर मन और मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते हैं।संस्कारों का मानव जीवन में प्रमुख स्थान है।संस्कार सदाचार का प्रतीक है सदाचार मनुष्य के आंतरिक गुणों को परिष्कृत कर सुसंस्कृत बनाती है। सुसंस्कृत व्यक्ति के रहन-सहन, बोलचाल, बात - व्यवहार उसके संस्कारों के परिचायक होते हैं। कह सकते हैं कि व्यक्ति अपने सुख - संसाधनों के आधार पर सभ्य कहलाता है तो अपने संस्कारों के आधार पर सुसंस्कृत कहलाता है अर्थात व्यक्ति के संस्कार, श्रेष्ठता व सज्जनता प्रमाणित करते हैं। वास्तव में, संस्कार व्यक्ति का आत्मिक रूप से सुंदर होना, सद्गुण व सदाचार से पुष्ट होना प्रकट करते है जो भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। भारतीय संस्कृति सदा से ही त्याग संयम और धर्म की संस्कृति है 'त्यक्तेन भुंजीथा' की संस्कृति हमें यह संस्कार देते हैं कि-

औरों को हंसते देखो मनु हंसो और सुख पाओ।

अपने सुख को विस्तृत कर लो सब को सुखी बनाओ।।

प्रेम, करुणा, समरसता, सद्भावना, परस्पर सहयोग, आत्मानुशासन, आत्म संयम, आत्मविश्वास ऐसे अनंत गुण हमारे संस्कारवान होने का प्रतीक होते हैं।जैसे एक मकान को घर और घर से गृह बनाना संस्कार का प्रतीक है ठीक उसी तरह एक मानव जीवन को व्यवहार- कुशल व निपुण बनाना भी संस्कार का प्रतीक है।

संस्कार का अर्थ: संस्कार शब्द का मूल अर्थ है, 'शुद्धीकरण'।हिंदू संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति में अभीष्ट गुणों को जन्म देना भी था। प्राचीन भारत में संस्कारों का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व था। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी

सहज प्रवृतियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता था। ये संस्कार इस जीवन में ही मनुष्य को पवित्र नहीं करते थे, उसके पारलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते थे।

संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की सम्पूर्वक कृञ धातु से घञ प्रत्यय सम् + कृ + घञ् द्वारा बनी है। व्यक्ति को परिष्कृत करने के लिए, संस्कारित करने के लिए जो पद्धति अपनाई जाती है उसे ही संस्कार कहते हैं।

डॉक्टर सत्यव्रत सिद्धांताल्ंकार संस्कारों की वैज्ञानिक विधि से व्याख्या करते हुए अपने ग्रंथ संस्कार चंद्रिका पृष्ठ 22 में लिखते हैं कि बालक के उत्पन्न होते ही उसे संस्कारों की भट्ठी में डालना ही संस्कार कहलाता है। संस्कार समुच्चय की भूमिका में ज्ञानमय प्रगतिशील और सफल बनाने का नाम साधन संस्कार है।

स्कंद पुराण में कहा गया है कि 'जन्मना जायते शुद्र: संस्कार द्रवित उच्यते' अर्थात जन्म से सभी शुद्र होते हैं संस्कारों से द्विज बनते हैं।

आचार्य चरक के अनुसार दुर्गुणों एवं दोषों का परिहार तथा गुणों का परिवर्तन करके भिन्न एक नवीन गुणों का आधान करने का नाम संस्कार है।

मीमांसा दर्शन के अनुसार सबर स्वामी ने संस्कार शब्द का अर्थ इस प्रकार कहां है संस्कार वह है जिसके होने से पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के योग्य हो जाता है।

तंत्रवार्तिक के अनुसार संस्कार भी क्रियाएं तथा विधियां हैं जो योग्यता प्रदान करते हैं वह योग्यता दो प्रकार की होती है।

मानव धर्म शास्त्र के प्रवर्तक महर्षि मनु के अनुसार मनुष्य के शरीर और आत्मा को उन्नत करने के लिए मंत्रोच्चारण पूर्वक यथा विधि निषेक से लेकर शमशान अर्थात गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि उपर्यन्त जिसके संस्कार होते हैं।

वीरमित्रोदेय के अनुसार संस्कार का अर्थ होता है - परिशुद्धि या सफाई ।

महर्षि जैमिनी के अनुसार संस्कार वह है जिससे कोई व्यक्ति या वस्तु किसी कार्य के योग्य हो जाते हैं संस्कारों के द्वारा वस्तु या प्राणी को और अधिक संस्कृत परिमार्जित एवं उपादेय बनाना ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

राजबली पांडेय के अनुसार वास्तव में संस्कार व्यंजक तथा प्रतीकात्मक अनुष्ठान है। उनमें बहुत से अभिनयात्मक उद्गार और धर्म, वैज्ञानिक मुद्राएं एवं इंगित पाई जाती हैं।

मनु के अनुसार संस्कार शरीर को विशुद्ध करके उसे आत्मा का उपयुक्त स्थल बनाते हैं।इस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व की सर्वांगीण उन्नति के लिए भारतीय संस्कृति में संस्कारों का विधान है।

संस्कार का उद्देश्य : हिंदू संस्कार में प्राचीन काल से आज तक अनेक विश्वास और कर्मकांड जुड़ते रहे हैं। जो उसके स्वरूप और कार्यविधि को समय अनुसार आंदोलित करते रहे हैं। यह प्रयोजन और उद्देश्य इसके सामाजिक और धार्मिक पक्षों से संबंध रखते हैं।

प्रतीकात्मक उद्देश्य : मनुष्य के जीवन से संबंधित जो विशिष्ट भावनाएं और उद्वेग उद्घाटित होते हैं यह संस्कारों के प्रतीकात्मक उद्देश्य हैं। अनुराग, स्नेह, प्रेम, शोक, दुख, घृणा आदि व्यक्ति के मन की ऐसी अभिव्यक्तियां है जो हर्ष और विषाद को प्रतीकात्मक रूप से अभिव्यक्त करती हैं। जैसे नामकरण संस्कार पुत्र जन्म के आनंद को व्यक्त करता है तथा अंत्येष्टि संस्कार किसी के निधन पर उसके प्रति व्यक्त की गई विषाद भावना को प्रकट करता है।

विघ्न बाधाओं और अशुभ शक्तियों से जीवन की रक्षा : व्यक्ति के जीवन में विघ्न बाधाएं आती हैं जिनसे उसका विकास क्रम अवरुद्ध होता है। ऐसी अशुभ शक्तियों और विघ्न बाधाओं से जीवन की रक्षा करने के लिए संस्कारों की योजना की गई है।संस्कारों के माध्यम से अशुभ शक्तियों के विनाश की कामना की जाती रही तथा शुभ शक्तियों के आगमन की कामना की जाती है।

लौकिक समृद्धि की कामना : संस्कारों को संपन्न करते समय व्यक्ति विभिन्न संस्कारित वस्तुओं की कामना करता है दीर्घ जीवन, सुख समृद्धि, संपत्ति, शक्ति, बुद्धि, वैभव, संतान आदि की इच्छा देवताओं से करता है।

वांछित वस्तु की प्राप्ति : संस्कारों के आयोजन के माध्यम से व्यक्ति अपनी वांछित वस्तु को प्राप्त करने की कामना करता रहा है।अदृश्य शक्तियों को प्रसन्न करके व्यक्ति अभीष्ट वस्तुओं को प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है।

मनुष्य का सामाजिकरण : मनुष्य को सामाजिक बनाना इसका प्रमुख उद्देश्य है। संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक प्रतिमानों, मूल्यों, आदर्शों आदि का ज्ञान प्राप्त करता है। संस्कारों से व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और सामाजिक बनता है।

व्यक्तित्व का विकास : संस्कारों की निष्पन्नता से मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होता है। धार्मिक प्रभाव में वह विभिन्न देवी-देवताओं के पूजन उपरांत एक निष्ठ होकर धर्म का अनुसरण करता है। और मनुष्य में सामाजिक और धार्मिक प्रेरणा निहित होती है।

नैतिकता एवं आध्यात्मिक विकास : संस्कार के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में नैतिकता का विकास करता है। इस प्रकार संस्कार व्यक्ति को नैतिक दायित्वों के प्रति जागरूक करता है। वह अपने दायित्वों को नैतिकता के आधार पर पूर्ण करता है।

संस्कारों के संयोजन और अनुगम से आध्यात्मिक विकास भी होता है, समस्त संस्कारों का प्रधान आधार धर्म है। धर्म अध्यात्म का जीवन है। अतः भारतीय समाज अध्यात्म बाद से अनुप्रमाणित है और सभी संस्कार धर्म संबंधित हैं।

शैक्षणिक विकास: संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति अन्य क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त करता है तथा वह व्यवहारिक आधार पर अपना उन्नयन करता है। लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की शिक्षाएं उसे संस्कार से प्राप्त होती है। जिससे उसका जीवन अनुशासित होता है।

संस्कार का क्रमिक विकास:

हिंदू समाज में संस्कारों का प्रचलन वैदिक युग से ही रहा है। सूत्रों और स्मृतियों में इनके विषय में विस्तार से लिखा गया है। मनुष्य के जीवन में संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है।ऋग्वेद में संस्कारों का उल्लेख नहीं है, किन्तु इस ग्रंथ के

कुछ सूक्तों में विवाह, गर्भाधान और अंत्येष्टि से संबंधित कुछ धार्मिक कृत्यों का वर्णन मिलता है। यजुर्वेद में केवल श्रौत यज्ञों का उल्लेख है, इसलिए इस ग्रंथ से संस्कारों की विशेष जानकारी नहीं मिलती। अथर्ववेद में विवाह, अंत्येष्टि और गर्भाधान संस्कारों का पहले से अधिक विस्तृत वर्णन मिलता है। गोपथ और शतपथ ब्राह्मणों में उपनयन गोदान संस्कारों के धार्मिक कृत्यों का उल्लेख मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा समाप्ति पर आचार्य की दीक्षांत शिक्षा मिलती है।

इस प्रकार गृह्यसूत्रों से पूर्व हमें संस्कारों के पूरे नियम नहीं मिलते। ऐसा प्रतीत होता है कि गृहसूत्रों से पूर्व पारंपरिक प्रथाओं के आधार पर ही संस्कार होते थे। सबसे पहले गृहसूत्रों में ही संस्कारों की पूरी पद्धति का वर्णन मिलता है। गृह्यसूत्रों में संस्कारों के वर्णन में सबसे पहले विवाह संस्कार का उल्लेख है। इसके बाद गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जात- कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न- प्राशन, चूड़ा- कर्म, उपनयन और समावर्तन संस्कारों का वर्णन किया गया है। अधिकतर गृह्यसूत्रों में अंत्येष्टि संस्कार का वर्णन नहीं मिलता, क्योंकि ऐसा करना अशुभ समझा जाता था। स्मृतियों के आचार प्रकरणों में संस्कारों का उल्लेख है और तत्संबंधी नियम दिए गए हैं। इनमें उपनयन और विवाह संस्कारों का वर्णन विस्तार के साथ दिया गया है, क्योंकि उपनयन संस्कार के द्वारा व्यक्ति ब्रह्मचर्य आश्रम में और विवाह संस्कार के द्वारा गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था।

संस्कार का अभिप्राय उन धार्मिक कृत्यों से था जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय का पूर्ण रूप से योग्य सदस्य बनाने के उद्देश्य से उसके शरीर, मन और मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते थे, किंतु हिंदू संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति में अभीष्ट गुणों को जन्म देना भी था। वैदिक साहित्य में "संस्कार' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। संस्कारों का विवेचन मुख्य रूप से गृह्यसूत्रों में ही मिलता है, किंतु इनमें भी संस्कार शब्द का प्रयोग यज्ञ सामग्री के पवित्रीकरण के अर्थ में किया गया है। वैखानस स्मृति सूत्र (200 से 500 ई.) में सबसे पहले शरीर संबंधी संस्कारों और यज्ञों में स्पष्ट अंतर मिलता है।

मनु और याज्ञवल्क्य के अनुसार संस्कारों से द्विजों के गर्भ और बीज के दोषादि की शुद्धि होती है। कुमारिल (ई. आठवीं सदी) ने तंत्रवार्तिक ग्रंथ में इसके कुछ भिन्न विचार प्रकट किए हैं। उनके अनुसार मनुष्य दो प्रकार से योग्य बनता है - पूर्व- कर्म के दोषों को दूर करने से और नए गुणों के उत्पादन से। संस्कार ये दोनों ही काम करते हैं। इस प्रकार प्राचीन भारत में संस्कारों का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व था। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृतियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता था। ये संस्कार इस जीवन में ही मनुष्य को पवित्र नहीं करते थे, उसके पारलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते थे। प्रत्येक संस्कार से पूर्व होम किया जाता था, किंतु व्यक्ति जिस गृह्यसूत्र का अनुकरण करता हो, उसी के अनुसार आहुतियों की संख्या, हव्यपदार्थों और मंत्रों के प्रयोग में अलग-अलग परिवारों में भिन्नता होती थी।

प्रायः सभी धर्मशास्त्रकार संस्कारों की संख्या 16 मानते हैं जो इस प्रकार हैं- गर्भाधान संस्कार, पुंसवन संस्कार, सीमंतोन्नयन संस्कार, जात कर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, चूड़ाकर्म संस्कार, कर्णछेदन संस्कार, विद्यारंभ संस्कार, उपनयन संस्कार, वेदारंभ संस्कार, केशांत संस्कार, समावर्तन संस्कार, विवाह संस्कार और अंत्येष्टि संस्कार।

विभिन्न संस्कारों का महत्व: संस्कार वास्तव में दोषों का निवारण एवं कमी की पूर्ति करते हुए शरीर और आत्मा में अतिशय गुणों का आधान करने वाले शास्त्र विहित कर्मकांड या क्रियाकलापों के माध्यम से उद्भूत अतिशय विशेष

को ही संस्कार कहते हैं। संस्कार, शरीर, आत्मा एवं मस्तिष्क को परिष्कृत करती है। जीव के गर्भ में आने से पूर्व से मृत्यु पर्यंत संस्कारों का महत्व है जिस प्रकार सर्वांग सुंदर चित्र बनाने के लिए उसके कच्चे खाके को संजाने संवारने के साथ ही उसे जीवंत बनाने के लिए उसमें कई रंग भरे जाते हैं उसी प्रकार मनुष्य के विकास एवं चरित्र निर्माण के लिए उसमें संस्कारों का आधान आवश्यक है। 16 संस्कार का हमारे जीवन में विशेष स्थान है। संस्कार हमारे जीवन को परिपूर्ण बनाते हैं। संस्कार आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक शुद्धि के साथ ही मानव का सभी क्षेत्रों में उत्थान करती है।

जीवन में संस्कार का महत्व:

जीवन में संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है । संस्कारों का हमारे जीवन में सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। यह मनुष्य को अलंकृत कर संस्कारवान बनाते हैं । इससे मनुष्यों का सर्वांगीण विकास होता है ।यह व्यक्तित्व का क्रमिक विकास जन्म से पूर्व और मृत्यु तक करते हैं। संस्कार, मनुष्य को योग्य बनाकर उसे कर्तव्यों के प्रति सचेत एवं जागरूक नागरिक बनाता है। संस्कारित मनुष्य आचरणवान और चरित्रवान होता है। यह मानव के समाजीकरण में सहायता करता है जिससे व्यक्ति सामाजिक जटिलताओं और चुनौतियों का सामना करने में सफल होता है । मनुष्य को अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाते ले जाते हुए यह व्यक्ति का ज्ञान चक्षु खोलते हैं ।संस्कार समाज का उत्थान और उत्कर्ष करते हैं क्योंकि बच्चे का जीवन व मन भी कोरे कागज की भांति होता है। जब बच्चा छोटा होता है तभी उसमें अच्छे संस्कार डाले जा सकते हैं ।शिक्षा से मनुष्य में समाज हितलक्षी और आध्यात्मिक गुणों का विकास और वृद्धि होती है उसी को संस्कार कहते हैं। जैसा कि शंकराचार्य ने कहा है मात्र दोषापनयन या मात्र गुणाधान से नहीं बल्कि संस्कार के लिए दोषापनयन और गुणाधान दोनों की आवश्यकता है क्योंकि संस्कार हमारे जीवन को परिपूर्ण बनाते हैं ।

संस्कारों से मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होता है। उसके जीवन के विभिन्न स्तर संस्कारों के सहयोग से संपृक्त होते हैं जो उसके जीवन को परिपूर्ण करते हैं तथा सामाजिक और धार्मिक बनाते हैं। वस्तुतः संस्कारों के योग से मनुष्य का व्यक्तित्व शुद्ध और परिष्कृत होता है तथा वह लौकिक और पारलौकिक अभिव्यक्तियों को समुन्नत करता है। समाज का आधार व्यक्ति होता है, व्यक्ति से परिवार बनता, परिवार से समुदाय और समुदाय से समाज। परिष्कृत व्यक्ति से समाज भी परिष्कृत होता है। संस्कार से व्यक्ति ही नहीं समाज भी परितुष्ट होता है। संस्कार समाजीकरण का परिचायक है। संस्कारों का महत्व व्यक्ति के कर्मस्थल, कथन व पठन-पाठन पर भी प्रभाव डालता है। संस्कारवान व्यक्ति अपने कार्यों को उन्नयन अनुशासित ढंग से करता है।उसका दैहिक और भौतिक जीवन सुव्यवस्थित ढंग से उन्नत चलता है। संस्कार का आधार ही धर्म है इसलिए संस्कारवान व्यक्ति उन्नत, परिष्कृत और सुसंस्कृत बनता है।

संस्कारों का जीवन मूल्यों पर भी गहन प्रभाव पड़ता है। संस्कारों का हिंदू धार्मिक एवं समाजिक जन -जीवन में महत्व इसलिए और अधिक बढ़ जाता है,क्योंकि यह व्यक्ति को नैतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों से अभिभूत करते हैं। संस्कार सदाचार का प्रतीक है। संस्कार मनुष्य के आंतरिक गुणों को परिष्कृत कर सुसंस्कृत बनाती है। सुसंस्कृत व्यक्ति के रहन-सहन, बात – व्यवहार उसके संस्कारों के परिचायक होते हैं। कह सकते हैं कि व्यक्ति अपने सुख संसाधनों के आधार पर सभी कहलाता है तो अपने संस्कारों के आधार पर सुसंस्कृत कहलाता है अर्थात व्यक्ति के संस्कार उसके श्रेष्ठता व सज्जनता प्रमाणित करते हैं। वास्तव में, संस्कार व्यक्ति का आत्मिक रूप से सुंदर होना है, सद्गुण व सजा चारों से पुष्ट होना है जो भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। भारतीय संस्कृति सदा से ही त्याग, संयम और धर्म की संस्कृति रही। 'त्यक्तेन भुंजीथा' की संस्कृति रही है जो हमें यह संस्कार देती है।

संस्कार, मनुष्य के जीवन में नई स्थितियों के परिचायक हैं। यह मनुष्य के जीवन में आगे आने वाले विभिन्न स्तरों के उत्तरदायित्व का बोध कराते हुए उसके जीवन हो प्रगतिशील व व्यवस्थित करते हैं। यह मानव शुद्धि तथा व्यक्तित्व के विकास में सहायक हैं। यह मनुष्य की भौतिक आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओ की पूर्ति कर जटिल समस्याओं से परिचित कराते हैं। संस्कार से परिपूर्ण व्यक्ति सामाजिक दायित्व के प्रति सजग हो जाता है वह नैतिक गुणों जैसे -दया, क्षमा तथा समर्पणता के विकास में सहायक होते हैं।

वर्तमान युग में व्यक्ति की मानसिकता पूर्णत: परिवर्तित हो चुकी है। व्यक्ति का ध्यान केवल साधनों, कार्यों की ओर ही केंद्रित रहता है जिसमें उसको लाभ की प्राप्ति हो आज संस्कारों के ह्रास के कारण मनुष्य पश्चिमी सभ्यता की ओर अग्रसर होता जा रहा है, संस्कारों के माध्यम से ही भारतीय संस्कृति की सुरक्षा हो सकती है। मानव एवं समाज एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। उत्थान एवं समाज की उन्नति के लिए संस्कार परंपरा का पुनरुत्थान आवश्यक है।